ISSN: 0973-0583

बिहार के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के लोगों में शराबबंदी के बाद कुशल मंगल एवं सुरक्षा के स्तर का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

मो० शरीफ आलम

शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।

प्रो० (डॉ०) अजय कुमार

पूर्व विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, जगजीवन कॉलेज, आरा ।

शोध-सार

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य बिहार की ग्रामीण आबादी के लोगों में शराबबंदी के बाद कुशल मंगल एवं सुरक्षा के स्तर का अध्ययन करना था। साथ ही यह भी देखना था कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रयोज्जयों के बीच कुशल मंगल एवं सुरक्षा के स्तर को लेकर क्या भिन्नताएँ हैं। इसके लिए 300 प्रयोज्जयों का चयन किया गया था। जिनमें से 120 उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे, 100 मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे एवं 80 निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे। इनका अध्ययन के लिए देवेंद्र सिसोदिया द्वारा निर्मित कुशल मंगल मापनी तथा मसलो द्वारा विकसित सुरक्षा मापनी का उपयोग किया गया था। परिणाम में देखा गया कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के व्यक्तियों में कुशल मंगल एवं सुरक्षा स्तर को लेकर कोई भिन्नता नहीं पायी गयी है। ये तीनों समूह इन दोनों मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर समान पाए गए हैं।

शब्द कुँजी : शराबबंदी, सामाजिक-आर्थिक वर्ग, बिहार, कुशल मंगल, सुरक्षा स्तर।

Received : 10/6/2025 **Acceptance : 25/7/2025**

परिचय

अप्रैल 2016 में बिहार में शराबबंदी लागू होने से राज्य के सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। घरेलू हिंसा, स्वास्थ्य समस्याओं और सार्वजनिक अव्यवस्था सहित व्यापक शराबबंदी से जुड़ी समस्याओं के समाधान के प्राथमिक उद्देश्य से सरकार द्वारा लागू की गई यह नीति जल्द ही राज्य के हाल के इतिहास की सबसे विवादास्पद नीतियों में से एक बन गई। हालाँकि इस प्रतिबंध की जन स्वास्थ्य में सुधार और अपराध दर में कमी लाने की क्षमता के लिए प्रशंसा की गई, लेकिन इसने जटिल आर्थिक चुनौतियाँ भी पैदा की, खासकर राज्य के राजस्व और अवैध गतिविधियों में वृद्धि से संबंधित। सिंह (2016) ने अपने अध्ययन "बिहार में शराबबंदी: सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का एक अध्ययन" में बिहार में शराबबंदी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का उल्लेख किया और निष्कर्ष निकाला कि पूर्ण प्रतिबंध से राजस्व की हानि हुई और कालाबाजारी व गुप्त उत्पादन को बढ़ावा मिला। लेकिन बिहार सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के दौर से गुजर रहा है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2015-16 से पता चलता है कि बिहार में शराबबंदी से पहले 15-49 आयु वर्ग के लगभग 30% पुरुष शराब का सेवन करते थे। शराब के दुरूपयोग से व्यक्ति को काफी नुकसान पहुंचा है। साथ ही परिवार और समाज को भी। दीर्घकालिक शराब के उपयोग को कई शारीरिक समस्याओं जैसे कि लीवर सिरोसिस, लीवर रोग, होंठ, मुंह और ग्रसनी कैंसर तथा हृदय रोग से भी जोड़ा गया है। शराबबंदी की अच्छी बात यह है कि युवा या नई पीढ़ी शराब के सेवन की ओर आकर्षित नहीं हो रही है। लेकिन यह भी सच है कि शराबबंदी के कारण गांजा, स्मैक आदि जैसे अन्य नशीले पदार्थों के सेवन में भी वृद्धि हुई है, खासकर युवाओं में।

उद्देश्य:

शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. शराबबंदी के बाद नागरिकों के बीच सुरक्षा और कुशल मंगल के स्तर का पता लगाना।
2. शराबबंदी के बाद लोगों के बीच सामाजिक-आर्थिक स्तर उत्थान का आकलन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses): प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ विकसित की गयी थी :-

1. शराबबंदी के कारण ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बेहतर होगी।
2. शराबबंदी के बाद ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के बीच सुरक्षा की भावना होगी।"

अध्ययन विधि :

(।) प्रतिदर्श - प्रस्तुत शोध में ग्रामीण क्षेत्र के 300 लोग प्रयोज्जय के रूप में लिए गए थे। ये सभी 20 से 40 वर्ष तक के आयु के थे। इनका चयन बिहार राज्य के विभिन्न जिलों से लिया गया था। कुल प्रयोज्जयों में से 120 उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे, 100 मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे एवं 80 निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के थे।

समावेशन मानदंड :

- बिहार का मूल निवासी
- ग्रामीण क्षेत्रों के लोग
- आयु समूह 20-40 वर्ष

बहिष्करण मानदंड :

- मनोरोग का इतिहास
- मादकता
- कानूनी दिक्कतें

(ठ) प्रस्तुत शोध में अध्ययन किए गए आश्रित एवं स्वतंत्र चरों की विस्तृत व्याख्या निम्नलिखित है:

स्वतंत्र चर

1. सामाजिक-आर्थिक स्थिति :- सामाजिक-आर्थिक स्थिति को आय, व्यवसाय और शिक्षा सहित कई कारकों द्वारा मापा जाता है। भारतीय समाज में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ हैं। अलग-अलग स्थिति के लोगों के पास अपने संसाधन, जीवनशैली और सांस्कृतिक मूल्य हैं। यह जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में उनके विचारों को प्रभावित करता है।

आश्रित चर

1. कुशल मंगल:- कुशल मंगल को मनुष्य की मनोवैज्ञानिक अवस्था के रूप में परिभाषित किया गया है जो मनोवैज्ञानिक कार्य करने की स्थिति को प्रस्तुत करती है। उदाहरण, मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत विकास, जीवन में उद्देश्य, जीवन संतुष्टि, जीवन की गुणवत्ता, उपलब्धि। कुशल मंगल को खुशी, जीवन की संतुष्टि और कार्य भूमिका, उपलब्धि प्रेरणा, प्रेम, शांति, अपनापन और किसी भी तरह की परेशानी, असंतोष या चिंता आदि की भावना के रूप में समझाया जा सकता है। व्यक्ति परक कल्याण जीवन की गुणवत्ताएँ सामान्य संतुष्टि स्तर, उपलब्धि की भावना आदि के साथ कुछ हद तक सह-संबंध दिखाता है और मानसिक विकार और ऐसे विभिन्न चर के साथ नकारात्मक रूप से जुड़ा हुआ है।

2. सुरक्षा का स्तर : यह जीवन में कुछ कीमती होने का अनुभव है। यह विभिन्न स्थितियों और मानसिकता के साथ उत्पन्न होता है और व्यवहार के कुछ नियमों में परिणाम होता है। असुरक्षा कई प्रकार की होती है- वित्तीय, शारीरिक, स्वास्थ्य, सामाजिक, पारस्परिक और भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक।

(C) शोध उपकरण – प्रस्तुत शोध में दो मनोवैज्ञानिक मापनियों का प्रयोग किया गया है जिसकी पृथक रूप से व्याख्या निम्नलिखित है -

1. कुशल मंगल मापनी: (Psychological Well & being Scale)- इस अध्ययन में डॉ० देवेन्द्र सिंह सिसोदिया और सुश्री पूजा चौधरी द्वारा विकसित मनोवैज्ञानिक स्वस्ति-बोध मापनी का उपयोग किया गया। इसमें 50 एकांश हैं जो स्वस्ति-बोध के पाँच आयामों को मापते हैं यानी जीवन संतुष्टि, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिकता, दक्षता और पारस्परिक संबंध। सभी आयामों में 10 एकांश हैं। सभी आइटम के लिए पाँच बिंदु प्रतिक्रिया पैटर्न हैं- पूरी तरह से सहमत, सहमत, तटस्थ, असहमत, पूरी तरह से असहमत। उच्च स्कोर उच्च मनोवैज्ञानिक स्वस्ति-बोध को दर्शाता है। इस मापनी पर अंकों का विस्तार से हो सकता है। इस मापनी की विश्वसनीयता और वैधता क्रमश: 0.87 और 0.94 पाई गई।

2. सुरक्षा-असुरक्षा सूची: इसका विकास मास्लो द्वारा किया गया था। इसमें 75 एकांश (सकारात्मक और नकारात्मक दोनों) हैं। प्रत्येक पद के दो वैकल्पिक उद्धार हैं: हाँ, नहीं (?) इस सूची पर अर्जित अंक जितना अधिक होगा, असुरक्षा की भावना उतनी ही अधिक होगी

और कम अंक उच्च सुरक्षा भावना अंकों दर्शाता है। इस मापनी के आइटमों को सकारात्मक कथनों के लिए 2,1,0 और नकारात्मक कथनों के लिए 0,1,2 के रूप में स्कोर किया जाता है। इस टूल का उच्चतम स्कोर 150 और न्यूनतम स्कोर 47 और उससे कम है।

(D) प्रदत्त-संग्रह विधि- प्रयोज्जयों को सर्वप्रथम शोध के उद्देश्यों से अवगत कराया गया एवं उनसे बातचीत कर एक सौहार्द्रपूर्ण वार्तालाप किया गया। उन्हें यह विश्वास दिलाया गया कि यह शोध एक शैक्षणिक कार्य के लिए हैं एवं उनकी किसी व्यक्तिगत योग्यता का मापन नहीं है। इसके बाद मापनी उनके सामने प्रस्तुत किया गया। आवश्यक निर्देश देने के बाद मापनी पर उनकी प्रतिक्रिया ली गयी। यदि मापनी के किसी एकांश पर उन्हें कोई समस्या हुई तो उसे दूर किया गया।

(E) प्रदत्त विश्लेषण विधि- प्रतिक्रिया लेने के बाद विभिन्न एकांशों का अंकन किया गया। फिर सभी प्राप्त अंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। इसके लिए माध्य, मानक विचलन एवं टी-अनुपात का प्रयोग किया गया।

आकृति-1

विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बंधित प्रयोज्जयों का कुशल-मंगल मापनी पर माध्य प्राप्तांक का आलेखीय प्रस्तुतीकरण

परिणाम (Result) : शोध के परिणामों को तालिका 1 एवं 2 के माध्यम से दर्शाया गया है :-

तालिका-1

Sl.no.	प्रयोज्जय समूह	माध्य	मानक विचलन	टी-अनुपात
A.	उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति (N=120)	130.02	15.28	vs b = 2.13 P>.01 (df=218)
B.	मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति (N=100)	135.18	19.87	a vs c = 1.53 P>.01 (df=178)
C.	निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति (N=80)	131.04	16.56	vs b = 2.13 P>.01 (df=198)

तालिका-1 में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बंधित प्रयोज्जयों का कुशल-मंगल मापनी पर माध्य प्राप्तांक प्रस्तुत किया गया है। यहाँ तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के व्यक्तियों का माध्य 130. 02 है, मध्यम वर्ग के व्यक्तियों का माध्य 135.18 है एवं निम्न वर्ग के व्यक्तियों का माध्य 131.04 है। इन तीनों वर्ग का आपस में तुलना कर टी-अनुपात दर्शाया गया है। तीनों का एक दूसरे के साथ टी-अनुपात सार्थक सिद्ध नहीं हुआ है अर्थात् यह बताता है कि यह तीनों सामाजिक-आर्थिक वर्ग के समूह कुशल मंगल मापनी पर समान पाए गए हैं। इन तीनों में कुशल मानक का स्तर एक जैसा ही है। तीनों में कोई भी अंतर नहीं प्राप्त हुआ है। इससे यह ज्ञात होता है कि शराबबंदी के बाद व्यक्तियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर में उन्नति आयी है। वो अब जीवन में आगे बढ़ रहे हैं तथा अपना भविष्य सुनिश्चित कर रहे हैं। इस प्रतिबंध का हाशिए पर रहने वाले समुदायों, खासकर शराब उद्योग पर आर्थिक रूप से निर्भर लोगों पर, असमान रूप से असर पड़ा। कई छोटे उत्पादकों, विक्रताओं और मजदूरों को गंभीर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस प्रतिबंध से घरेलू खर्च को शराब से हटाकर भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसी आवश्यक वस्तुओं पर केंद्रित करने की संभावना है। खर्च करने के तरीकों में यह बदलाव कई परिवारों, खासकर निम्न-आय वर्ग के परिवारों के जीवन स्तर में सुधार ला सकता है। यह परिणाम शोध की पहली परिकल्पना की पुष्टि करता है।

ISSN: 0973-0583

तालिका-2

विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बंधित प्रयोज्जयों की सुरक्षा की भावना मापनी पर माध्य प्राप्तांक

Sl.	प्रयोज्जय समूह	माध्य	मानक विचलन	टी-अनुपात
A.	उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति (N=120)	76.86	12.08	a vs b = 1.96 P>.01 (df=218)
B.	मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति (N=120)	80.54	15.06	vs c = 1.09 P>.01 (df=178)
C.	निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति (N=120)	78.22	13.18	vs b = 0.74 P>.05 (df=198)

आकृति-2

तालिका-2 में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बंधित प्रयोज्जयों का सुरक्षा की भावना मापनी पर माध्य प्राप्तांक दर्शाया गया है। यहाँ तालिका से यह पता चलता है कि उच्च सामजिक-आर्थिक वर्ग के व्यक्तियों का माध्य 76.86 है, मध्यम वर्ग के व्यक्तियों का माध्य 80.54 है तथा निम्न वर्ग के व्यक्तियों का माध्य 78.22 है। इन तीनों समूहों का मानक विचलन क्रमश: 12.08, 15.06 एवं 13.18 है। तालिका में इन सभी समूहों का आपस में टी-अनुपात प्रस्तुत किया हुआ है जिसे देख कर यह ज्ञात होता है कि सभी समूह सुरक्षा मापनी पर समान पाए गए हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के व्यक्तियों में सुरक्षा की भावना एक जैसी है। वो सभी स्वयं को एक समान रूप से सुरक्षित महसूस करते हैं। यहाँ शोध की दूसरी परिकल्पना को समर्थन मिलता है। निश्चित ही शराब बंदी के बाद सभी व्यक्ति विशेषकर महिलाएँ सुरक्षित महसूस करने लगी हैं। अब उनके साथ घरेलू हिंसा एवं पति द्वारा मारपीट नहीं होती है। समाज में अपराध का स्तर भी गिरा है। इससे सभी सामाजिक-आर्थिक वर्ग के लोग लाभान्वित हुए हैं।

वात्स्यायन (2019) ने "बिहार में शराबबंदी : एक नीति विश्लेषण" शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया, जो बिहार में शराबबंदी के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों के नीतिगत विश्लेषण का सारांश प्रस्तुत करता है। रेड्डी और भारती (2020) द्वारा प्रकाशित यौन हिंसा अनुसंधान पहल ने निष्कर्ष निकाला कि नीतिगत परिणामों से बिहार में महिलाओं के खिलाफ अपराध में कमी आई है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि शराबबंदी के बाद उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के लोगों में कुशल मंगल तथा सुरक्षा का स्तर एक समान पाया गया है। ये सभी जीवन के प्रति सकारात्मक हैं एवं खुद को सुरक्षित महसूस करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. सुश्री शिवानी कुमारी और डॉ० देवकुमार जैकब "बिहार शराब निषेध नीति: सामाजिक संक्रमणकालीन न्याय के परिणामों का आकलन और मापन।" आई. ओ.एस.आर. जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस (आई.ओ.एस.आर.-जे.एच.एस.एस.), 28(2), 2023, पृ० 01-09.
2. शराब प्रतिबंध और अपराध: बिहार निषेध की एबीसी", नताशा झा, मृत्युंजययन निलयमगोड़े, रेवती सूर्यनारायण, 2018.
3. रेड्डी भीम और भारती, कोंडेपुडी, (2020) 'क्या बिहार, भारत में शराबबंदी के परिणामस्वरूप महिलाओं के विरूद्ध हिंसा कम हुई है?' क्या बिहार, भारत में शराबबंदी के परिणामस्वरूप महिलाओं के विरुद्ध हिंसा कम हुई है? यौन हिंसा अनुसंधान पहल (svri.org)
4. वात्स्यायन सुनील, (2016) 'बिहार में शराबबंदी: एक नीति विश्लेषण', बिहार में शराबबंदी: एक नीति विश्लेषण- मोवेंडी इंटरनेशनल
5. सुधाकर प्रसाद सिंह- बिहार में शराबबंदी: सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का एक अध्ययन। यूरोपीय शैक्षणिक अनुसंधान, खंड-IV, अंक-4, जुलाई 2016.